उज्ज्वल भविष्य

स्वयं प्रकाश

उज्ज्वल भविष्य

स्वयं प्रकाश

गाड़ी ने प्लेटाफ़ॉर्म छोड़ा तो ऊबते हुए स्पेक्ट्रा इंजीनियरिंग गुरप के अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक और मालिक मित्तल साहब ने टाटा करने वालों को प्रत्युत्तर दिया और जूते उतारकर टाँगें पसार लीं। चलो! अब अपन हैं और यह यात्रा। बाजू की खाली वर्थ पर नज़र डालो। कूपे की तीनों बर्थ खाली थीं और खाली ही रहने वाली थीं। इससे तो कोई होता! पर क्या पता कौन होता? कोई बोर करने वाला होता तो? नहीं, ऐसे ही ठीक है।

अभी कूपे का दरवाज़ा बंद करने की सोच ही रहे थे कि एक लड़का दौड़ता हुआ आता दिखाई दिया। वह प्लेटफ़ॉर्म के ऐन सिरे पर रफ्तार पकड़ चुकी गाड़ी में उछलकर चढ़ गया-इसी डिब्बे में-और सीधा मित्तल साहब के कूपे में घुस गया और पीछे से दरवाज़ा बंद करने लगा।

‘‘क्या बात है? क्या बात है? क्या चाहिए?’’ मित्तल उखड़ गए।

लड़के ने हाथ जोड़े, हँफनी सँभाली, बोला, ‘‘घबराइए नहीं, चोर-डाकू नहीं हूँ, प्लीज़! दो मिनिट का मौका दीजिए।’’

मित्तल बैठे रह गए। टकटकी लगाकर लड़के को देखते रहे। उसने कूपे का दरवाज़ा पीछे हाथ कर बंद ज़रूर किया है, लेकिन बोल्ट नहीं किया है। किसी भी समय चिल्लाकर कंडक्टर को बुलाया जा सकता है...वैसे पानी की सुराही हाथ के बिल्कुल पास है। लड़के ने हमला करने की कोशिश की तो दे मारेंगे। फिर भी दिल धकधक कर रहा है। शायद माथ्रे पर पसीना भी छलक आया है।

दो मिनिट तक कुछ नहीं होने से मित्तल साहब का आत्मविश्वास लौटने लगा। बोले, ‘‘कौन हो? क्या चाहिए?’’

लड़के ने कमीज़ की बाँह से माथे का पसीना पोंछा, थूक गटका और हाथ जोड़कर बोला, ‘‘नौकरी चाहिए।’’

क्षणांश को मित्तल साहब को विश्वास नहीं हुआ कि उन्होंने ठीक से सुना है। बोले, ‘‘ऐं?’’

‘‘नौकरी।’’ लड़के ने दोहराया।

मित्तल साहब एकदम रिलेक्स हो गए, बल्कि उन्हें मज़ा आने लगा और वे मुस्कराए। मुस्कराहट अनायास एक मिनी ठहाके में बदल गई। बोले, ‘‘ओह! क्या नाटकीय स्थिति है! वाह! रीयलि ड्रामेटिक! थिएट्रिकल रादर। ज़िंदगी में कभी किसी ने इस तरह चलती ट्रेन में दौड़कर मुझसे नौकरी नहीं माँगी! हाँ, हवाई जहाज़ में एक बार एक आदमी ने ज़रूर नौकरी माँगी थी। पर अपने लिए नहीं, अपने एक नालायक भतीजे के लिए। नालायक लोग मुझे बहुत अच्छे लगते हैं, सो मैंने उसे रख भी लिया। आज वह मेरी एक फर्म में चीफ मैनेजर है। अभी कुछ दिनों पहले यह किस्सा मैं किसी को इंटरव्यू में बता रहा था। तुमने ज़रूर कहीं वह इंटरव्यू पढ़ लिया है और नौकरी माँगने का यह तरीका अख्तियार किया है। एक आई राइट? पर ज़रा सोचो, कितना खतरनाक है यह तरीका? मान लो गाड़ी पकड़ने की हड़बड़ी में गिर ही जाते! या अभी मैं कंडक्टर को बुलाकर कहूँ कि...फस्ट का टिकट तो क्या होगा तुम्हारे पास?’’

लड़का बगलें झाँकने लगा।

‘‘तो तुम दफ्तर में क्यों नहीं आ गए?’’

‘‘आया था। उन लोगों ने आपसे मिलने नहीं दिया।’’

‘‘तो घर आ जाते।’’

‘‘घुसने नहीं दिया।’’

क्लब?’’

‘‘कपड़े नहीं थे।’’

पार्किंग?’’

‘‘आपके सुरक्षा-कर्मचारी हर बेरोज़गार को आतंकवादी समझते हैं।’’

‘‘हाँ, यह बात तो है। तुम टेलीफोन...’’